P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-7* March- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

बाल–अपराध प्रवृत्ति के ग्रामीण एवं शहरी किशोर विद्यार्थियों का पारिवारिक–परिवेश तथा सुरक्षा एवं असुरक्षा की भावना का तुलनात्मक अध्ययन

सारांश

माता–पिता का असंतुलित व्यवहार, प्रशिक्षण देने में अयोग्य माता–पिता, घर का झगड़ालू वातावरण, पास–पड़ौस का अनैतिक वातावरण, विद्यालय का वातावरण आदि। किशोर बालकों के कोमल मन पर कुप्रभाव डालते है। वे समाज विरोधी कार्य, चोरी तथा मूल–प्रवृत्तियों से निर्देशित लैंगिक व्यवहार, जुआ, अत्याधिक क्रोध, तोड़–फोड़ आदि के रूप में प्रदर्शित होता है और वह बालक परिस्थितियों वंश बाल–अपराध की ओर उन्मुख हो जाता है। विद्यालयीय विद्यार्थियों द्वारा होने वाले अपराधों की घटना आज कल बढ़ती ही जा रही है, शोधकर्त्ता इन अपराधों के पीछे होने वाले कारणों का पता लगाना चाहता है, क्या इन कारणों के पीछे विद्यालय वातावरण जिम्मेदार है, या पारिवारिक वातावरण एवं सुरक्षा–असुरक्षा की भावना अतः यह शोध बढ़ते हुएबाल–अपराध को बढ़ावा देने वाले कारणों का अध्ययन है।

मुख्य शब्द : बाल अपराध, पारिवारिक–परिवेश, सुरक्षा एवं असुरक्षा।

मधु कंवर सोनी
प्राचार्या,
माँ सरस्वती बी.एड. कॉलेज,
जोधपुर, राजस्थान

जगदीश बाबल
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
जर्नादन राय नागर
विद्यापीठ,
उदयपुर, राजस्थान

प्रस्तावना

शिक्षा ज्ञानार्जन व सीखने की प्रक्रिया को समय सीमा में बन्धित करना सम्भव नहीं है। यह तो निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जो जन्म के साथ–साथ प्रारम्भ होती है, और आजीवन चलती रहती है । मनुष्य का सम्पूर्ण विकास शिक्षा पर निर्भर करता है। शिक्षा ही बालक को सर्वांगीण विकास की ओर ले जाती है। बालक किसी भी राष्ट्र की अमूल्य निधि होते है, शिक्षा के द्वारा ही बालक की मूल–प्रवृत्तियों का शोधन तथा मार्गान्तीकरण होता है। जिससे बालक का ही नहीं अपितु राष्ट्र का भी कल्याण हो। सर्वप्रथम बालक अनभिज्ञता में जो व्यवहार सीखता है।

परिवार समाज की सबसे छोटी इकाई होती है तथा वह अपने परिवार से ही सीखता है। माता–पिता की क्रियाएँ एवं उनके द्वारा शैशव काल में दिया गया व्यवहार ही बालक में सामाजिक गुणों का विकास करता है। परिवार बच्चे की सबसे पहली शिक्षा संरचना है। और उसकी माँ उसकी सबसे पहली शिक्षिका बच्चे के जन्म के कुछ दिन बाद ही उसके माता–पिता एवं परिवार के अन्य सदस्य उसे सुनना और बोलना सिखाने लगते है। मनोवैज्ञानिकों का मत है, कि बच्चे के व्यक्तित्त्व का दो तिहाई विकास उसके प्रथम चार–पाँच वर्षो में होता है और यह वह समय है, जब बच्चा अपने परिवार में रहता है, तब कहना न होगा कि बच्चों के व्यक्तित्त्व के निर्माण में सर्वाधिक भूमिका परिवार की रहती है। बच्चों की सम्पूर्ण शिक्षा में परिवारों का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से बड़ा सहयोग रहता है, उनकी शिक्षा में सर्वाधिक महत्त्व इनका ही होता है।

माता–पिता का असंतुलित व्यवहार, प्रशिक्षण देने में अयोग्य माता–पिता, घर का झगड़ालू वातावरण, पास–पड़ोस का अनैतिक वातावरण, विद्यालय का वातावरण आदि। किशोर बालकों के कोमल मन पर कुप्रभाव डालते है। वे समाज विरोधी कार्य, चोरी तथा मूल–प्रवृत्तियों से निर्देशित लैंगिक व्यवहार, जुआ, अत्याधिक क्रोध, तोड़–फोड़ आदि के रूप में प्रदर्शित होता है और वह बालक परिस्थितियों वंश बाल–अपराध की और उन्मुख हो जाता है।

आयु की दृष्टि से मुख्यतया 7 वर्ष से 18 वर्ष के मध्य के अपराधी किशोर अपराधी माने जाते हैं। 7 वर्ष से कम वाले बच्चों को उनके किसी भी बाल–अपराध प्रवृत्ति के बच्चो की उम्र 18 वर्ष है तथा राजस्थान, असम, कर्नाटक में 16 वर्ष मानी है।

Principal
Vidhyashram Institute of
Tearcher's Training
Opp. Ashapurna Township
Vill:-Uchiyarda Nandra Kallan
Benar, S. O. Jodhpur-342 027

सामान्य एवं शारीरिक अक्षम विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन

□ श्रीमती श्वेता[1]

साधारणतया यह धारणा बनाई जाती है कि शारीरिक अक्षम विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में सामान्यतः निम्न होती है। इसी प्रकार शारीरिक अक्षम विद्यार्थियों की मानसिक समस्याएँ सामान्यत अधिक होती है। इस संदर्भ में इन समस्याओं का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अध्ययन करना आवश्यक है।क्या इस धारणा का कोई औचित्य है? यदि है तो शारीरिक अक्षम विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर को उठाने के लिए प्रयास किये जाने चाहिए तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि में संवेगात्मक बुद्धि के कारण आने वाली समस्याको दूर किया जाना चाहिये। इन तथ्यों की जानकारी तभी हासिल की जा सकती है जब कि सामान्य व शारीरिक अक्षम विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए। उक्तधारणा की प्रस्तुत अध्ययन में जांच करने का प्रयास किया है।

की वर्ड: सामान्य विद्यार्थी,शारीरिक अक्षम विद्यार्थी,संवेगात्मक बुद्धि।

प्रस्तावना

वर्तमान लोक कल्याणकारी एवं लोकतंत्रात्मक युग में समानता, स्वतंत्रता एवं सामाजिक न्याय के सिद्धान्तों के आधार पर प्रत्येक व्यक्ति को उसकी समुचित शिक्षा, प्रशिक्षण, रक्षा एवं व्यक्तित्व के संतुलित और बहिर्मुखी विकास हेतु अधिकार प्रदान किए गए है। अधिकारों का उपयोग तभी कर सकता है जब कि वह पूर्णतः स्वस्थ हो अर्थात् जहां शारीरिक दृष्टि से व्यक्तिपूर्णतः स्वस्थ हो वहीं भावात्मक संवेगात्मक रूप से सुसमायोजित हो, उसमें गतिवाही पूर्णतः हो।

[1] प्रवक्ता, विद्याश्रम इन्स्टिट्यूट ऑफ टीचर्स ट्रेनिंग, जोधपुर (राजस्थान)

प्रत्येक व्यक्ति में इस जीवजगत के, समाज के कार्य को व्यवहारिक रूप प्रदान करने हेतु शारीरिक क्षमता एवं बौद्धिक सम्पन्नता हो। इस कारण प्रत्येक समाज एवं देश में व्यक्ति को उसकी शक्ति, गति तथा सामर्थ्यानुसार व्यक्तित्व के अधिकतम विकास हेतु सुअवसर एवं सुविधाएँ प्रदान की जाती है जिससे व्यक्ति देश का स्वावलम्बी एवं सुयोग्य नागरिक बन प्रगति की इस दौड़ में न केवल स्वयं के व्यक्तित्व का विकास कर सके वरन् देश का विकास, सम्पन्नता एव समृद्धि में वृद्धि कर सके।

अतः यही कारण है कि किसी भी देश अथवा समाज का सामान्य एवं प्रतिभाशाली बालकों के अतिरिक्त शारीरिक या मानसिक विकलांगता युक्तबालकों की शिक्षा एवं विकास पर भी ध्यान केन्द्रित करना अपरिहार्य है।

विकलांगता व्यक्ति की भौतिक, शारीरिक और मानसिक स्थितियों के साथ-साथ उससे संबंधित क्रिया-कलापों से उत्पन्न एक प्रकार की सामाजिक स्वरूपता है जिसका आकलन व्यक्ति के मनोसामाजिक परिस्थितियों पर निर्भर करता है जो स्थान, समय, परिस्थिति तथा सामाजिक भूमिका से संबंधित हो सकती है अर्थात् विकलांगता व्यक्ति की वह दशा है जो क्षति एवं अक्षमता के कारण उत्पन्न शारीरिक एवं मानसिक क्रियाओं संबंधी भूमिकाओं को सामान्य व्यक्तियों की तुलना में निर्वाह करने में बाधक होती है। अतः विकलांगता का सामाजिक स्वरूप वातावरण को परिलक्षित करता है।

इंटरनेशनल क्लासीफिकेशन ऑफ इम्पेयरमेंट, डिसेबिलिटीज एण्ड हैण्डीकैप्ड के अनुसार, "व्यक्ति में उम्र, लिंग, सामाजिक सांस्कृतिक कारकों में क्षति एवं अक्षमता के कारण जो नुकसान या पिछड़ापन हो जाता है, उसे विकलांगता कहते है।"

प्राचीनकाल से वर्तमान समय तक विकलांगों की शिक्षा का प्रश्न सदैव विचारणीय रहा है। मुखर्जी (1983) के अनुसार 320-480 ई. में गुप्त सम्राट के समय में शारीरिक रूप से विकलांगों के व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं पुर्नवास के लिए कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। प्रथम शताब्दी के अन्तर्गत विशेष शिक्षा आयोजन किया गया। प्रथम शताब्दी के अन्तर्गत विशेष शिक्षा की विश्व की पहली पाठ्यवस्तु "पंचतंत्र" की रचना पंडितविष्णु शर्मा ने की। कालान्तर में वैज्ञानिक क्रान्ति आई फलतः ऐसे संक्रमण काल में विकलांगों की स्थिति पर भी विचार करना आवश्यक समझा गया। 18वीं व 19वीं शताब्दी में विभिन्न देशों के शिक्षाविदों, समाजसुधारकों एवं नीति नियोजकों के विकलांग बालकों को जहां तक संभव हो सामान्य बालकों के साथ एकीकृत शिक्षा देने पर बल दिया। वर्ष 1981 अन्तर्राष्ट्रीय विकलांग वर्ष के रूप में मनाया गया था। संयुक्त राष्ट्र महासभा की सिफारिश पर अंतरराष्ट्रीय विकलांगता

Principal
Vidhyashram Institute of
Teacher's Training
Opp. Ashapurna Towenship
Uchiyarda, Jodhpur

IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम शैली का अध्ययन

श्रीमती श्वेता

शोधार्थी (शिक्षा)

कला, शिक्षा एवं समाज विज्ञान संकाय

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

डा० प्रार्थना फोफलिया

शोध–पर्यवेक्षिका

कला, शिक्षा एवं समाज विज्ञान संकाय

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

शोध सार

शिक्षा प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंग है– शिक्षक, छात्र और पाठ्यक्रम। पहले समय में शिक्षा 'शिक्षक केन्द्रित' होती थी। जिसमें शिक्षक अपने तरीके से छात्रों को शिक्षा प्रदान करता था। परन्तु वर्तमान शिक्षा प्रणाली 'छात्र केन्द्रित' हो गई है। अतः शिक्षक छात्र की आयु, मानसिक स्तर, रूचि आदि के अनुसार शिक्षा प्रदान करता है। जिस प्रकार हर शिक्षक के पढ़ाने का तरीका अलग अलग होता है उसी प्रकार प्रत्येक विद्यार्थी के सीखने अर्थात् अधिगम का तरीका भी अलग–अलग होता है। कोई विद्यार्थी देखकर सीखता है तो कोई सुनकर।

इस प्रकार व्यक्तिगत भिन्नताओं के आधार पर, विद्यार्थी की अधिगम शैली अलग–अलग होती है। विद्यार्थी की अधिगम शैली उसके वातावरण से भी प्रभावित होती है। अतः शोधार्थी जानना चाहती है कि क्या अधिगम शैली शहरी और ग्रामीण वातावरण से भी प्रभावित होती है? अतः शोधार्थी ने माध्यमिक स्तर के ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन किया है। उपकरण के रूप में करुणा शंकर मिश्रा द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत अधिगम शैली परिसूची का प्रयोग किया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में जोधपुर जिले के विद्यालयों में अध्ययनरत् कुल 80 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया। इस शोध हेतु जोधपुर जिले के शहरी क्षेत्र के 40 विद्यार्थियों एवं ग्रामीण क्षेत्र के 40 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

Principal
Vidhyashram Institute of
Teacher's Training
Opp. Ashapurna Township
Uchiyarda, Jodhpur

की वर्ड – माध्यमिक स्तर, अधिगम शैली

INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली पर उनके मानसिक स्वास्थ्य के प्रभाव का अध्ययन"

श्रीमती श्वेता
शोधार्थी (शिक्षा)
कला, शिक्षा एवं समाज विज्ञान संकाय
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर(राज़.)

डा० प्रार्थना फोफलिया
शोध–पर्यवेक्षिका
कला, शिक्षा एवं समाज विज्ञान संकाय
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर(राज.)

सारांश

किसी भी राष्ट्र के विकास की आधारशिला होते है – विद्यार्थी। विद्यार्थी राष्ट्र के विकास में तभी महत्वपूर्ण भूमिका निभा पायेंगें जब वे पूर्णतया स्वस्थ हो। स्वस्थ होने से आशय विद्यार्थी का शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ होना है। वर्तमान समय में सोशल मीडिया का प्रभाव, करियर बनाने की चिंता, परिवारजन व मित्रों का दबाव आदि कई ऐसे कारक है जो विद्यार्थी के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते है। विद्यार्थी की मानसिक स्वस्थता उसके अधिगम को भी प्रभावित करती है। मानसिक स्वस्थ विद्यार्थी विभिन्न अधिगम शैलियों के माध्यम से अध्ययन कर पाता है। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने **"शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली पर उनके मानसिक स्वास्थ्य के प्रभाव का अध्ययन"** किया है। न्यादर्श के लिए जोधपुर जिले के 40 शहरी व 40 ग्रामीण विद्यार्थियों का चयन किया गया। उपकरण के रूप में करूणा शंकर मिश्रा द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत अधिगम शैली परिसूची एवं अरूण कुमार सिंह एवं अल्पना सेन गुप्ता द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत मानसिक स्वास्थ्य बैटरी का प्रयोग किया गया है।

की–वर्ड – माध्यमिक स्तर, अधिगम शैली, मानसिक स्वास्थ्य ।

प्रस्तावना

शिक्षा से विद्यार्थी के व्यवहार में परिवर्तन होता है। विद्यार्थी के व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन को ही अधिगम कहा जाता है। प्रत्येक विद्यार्थी का अधिगम उसकी बुद्धि लब्धि, आनुवांशिकता, वातावरण, अधिगम शैली आदि जैसे कारको से प्रभावित होता है।

बालक के अधिगम को प्रभावित करने वाले कारको में अधिगम शैली प्रमुख है। अधिगम शैली बालकों के सीखने का तरीका है। प्रत्येक व्यक्ति या बालक की व्यक्तिगत भिन्नताएँ होती है, जो उनकी अधिगम शैली को प्रभावित करती है। अधिगम शैली सीखने की प्रक्रिया के दौरान सूचनाओं को विभिन्न तरीके से ग्रहण करना है। छात्रों की अधिगम शैली के अनुरूप अध्ययन कराने से छात्रों को अधिगम प्रभावी व तीव्र गति से होता है।

Principal
Vidhyashram Teacher's Training
Opp. Asha Nagar
Uchiyarda, Jodhpur

सामान्य एवं शारीरिक अक्षम विद्यार्थियों की स्वधारणा का अध्ययन

श्रीमती श्वेता
शोधार्थी (शिक्षा)
कला, शिक्षा एवं समाज विज्ञान संकाय
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान)
17/167,सीपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर (राजस्थान)
7737392031 swetamathur50@gmail.com

शोध सारांश

साधारणतया यह धारणा बनाई जाती है कि शारीरिक अक्षम विद्यार्थियों की स्वधारणा सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में सामान्यतः निम्न होती है। इसी प्रकार शारीरिक अक्षम विद्यार्थियों की मानसिक समस्याएँ सामान्यतः अधिक होती है। इस संदर्भ में इन समस्याओं का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अध्ययन करना आवश्यक है। क्या इस धारणा का कोई औचित्य है? यदि है तो शारीरिक अक्षम विद्यार्थियों की स्वधारणा के स्तर को उठाने के लिए प्रयास किये जाने चाहिए तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि में स्वधारणा के कारण आने वाली समस्या को दूर किया जाना चाहिये। इन तथ्यों की जानकारी तभी हासिल की जा सकती है जब सामान्य व शारीरिक अक्षम विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए। प्रस्तुत अध्ययन में उक्त धारणा की जांच करने का प्रयास किया है। अतः शोधार्थी ने माध्यमिक स्तर के सामान्य और शारीरिक अक्षम विद्यार्थियों की स्वधारणा का तुलनात्मक अध्ययन किया है। उपकरण के रूप में एस.पी. आहलुवालिया द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत चिल्ड्रनस सेल्फ कॉन्सेप्ट स्केल का प्रयोग किया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में जोधपुर जिले के विद्यालयों में अध्ययनरत् कुल 80 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया। इस शोध हेतु जोधपुर जिले के 40 सामान्य विद्यार्थियों एवं 40 शारीरिक अक्षम विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

की वर्ड
सामान्य विद्यार्थी, शारीरिक अक्षम विद्यार्थी, स्वधारणा

प्रस्तावना

प्रकृति ने मनुष्य को सुखी एवं उत्कृष्ट जीने के लिए कुछ वरदान दिए है जिनमें प्रमुख है – स्वस्थ शरीर एवं चुस्त दिमाग। यदि शरीर अस्वस्थ होता है तो मनुष्य न तो समायोजन कर पाता है और न ही अपना विकास कर पाता है, इसीलिए मनुष्य जीवन में स्वस्थ शरीर का अत्यधिक महत्व है। परन्तु कुछ मनुष्य गर्भकाल अथवा जीवन में कुछ अप्रत्याशित दुर्घटनाओं के कारण शारीरिक अक्षमताओं से ग्रसित हो जाते है। परिणामतः उन्हें कुछ अपूर्णताओं, विकृत्तियों और अक्षमताओं के साथ जीना पड़ता है। जब समाज के विभिन्न पक्ष इनके साथ भेदभाव, असमानतापूर्ण व उपेक्षा का व्यवहार करते है तो उन अक्षम व्यक्तियों का मनोबल और टूट जाता है। मनोबल टूटने के कारण शारीरिक अक्षम बालक की स्वधारणा भी प्रभावित होती है। वह अपने आपको हीन व तुच्छ महसूस करने लगता है। उसका आत्मविश्वास डगमगाने लगता है। वह अपनी स्वधारणा (अपने प्रति सोच) का स्तर उच्च करने का प्रयास नहीं करता है। इनकी भावनाओं, व्यक्तित्व, स्वधारणाओं और समस्याओं को समझकर ही हम शारीरिक अक्षम विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहयोग दे सकते है। मानवता, लोकतंत्र, समानता, प्रेम, बंधुत्व के सामान्य विश्वासों के आधार पर शारीरिक अक्षम व्यक्तियों को दया नहीं सहयोग, प्रोत्साहन व समान अवसरों की आवश्यकता होती है। विश्नोई कविता (2000) ने अपने शोध "A study of self-concept as related to Academic

Principal
Vidhyashram Institute of
Teacher's Training
Opp. Ashapurna Township
Uchiyarda, Jodhpur

वैदिक कालीन तत्व चिंतन- वर्तमान संदर्भ में

विकास चुडावत
सह आचार्य, विद्याश्रम, जोधपुर

shodhshree@gmail.com

शोध सारांश

वैदिक कालीन इतिहास में वैदिक तत्वों के आधार पर ही समाज में धर्म की स्थापना की गयी है। यह वेद, आश्रम, धर्म, संस्कार के आधारभूत तत्व के रूप में विशेष महत्व रखते है। वैदिक धर्म, वर्ण-व्यवस्था तथा आश्रम व्यवस्था का प्रमुख आधार स्तम्भ है। इसी के आधार पर वर्तमान समय में इन वैदिक तत्वों को पुनः स्थापित करने के लिए चिंतन किया गया है।

संकेताक्षर : *1. आ, व्य – आश्रम व्यवस्था, 2. ई. पू. – ईसा पूर्व 3. वै. का. – वैदिक काल, 4. व.स. – वर्तमान समय, 5. व. स. – वर्तमान संदर्भ, 6. वै. त. – वैदिक तत्व*

भारतीय इतिहास[1] में वैदिक काल के बारे में जब भी लिखने का विचार आता है तो एक ही बात मस्तिष्क उत्पन्न होती है। यह विचार वैदिक सभ्यता के तत्व चिंतन से संबंधित है।

यह तत्व क्या है तथा कितने काल से विद्यमान है? यह प्रश्न वर्तमान में भी विचाराधीन सिद्ध हुआ आखिर क्यों वैदिक कालीन तत्व वर्तमान समय में इतने महत्व रखते है। आजकल अनेक भारतीय इतिहासकार एवं भारतीय मनीषि अपना मत रखते है कि वैदिक कालीन तत्व हिन्दु धर्म से संबंधित है। यह तत्व सनातन काल से चले आ रहे है। इन तत्वों में वेद, आश्रम-व्यवस्था, विवाह, धर्म, संस्कार, दर्शन इत्यादि माने गये है।

वैदिक काल में समाज इन तत्वों की सामाजिक स्वरूप देते हुए प्रत्येक मनुष्य को जीवन निर्वाह का अध्ययन करवाते थे। वैदिक काल में वेद ही सर्वोपरी माने गये है यथा कहा भी गया हे-

''वेदोऽखिलो धर्ममूलम्''।

अर्थात् सम्पूर्ण वेद ही धर्म का मूल है।

वैदिक काल के दौरान (11000-5000 ईसा पूर्व) आश्रम तथा गुरूकुल से ही धर्म का प्रार्दुभाव हुआ, जो कुरू-पांडव क्षेत्र की विचारधारा तथा व्यवहारिक रूप में विकसित हुआ, जो कुरू-पांडव युग[2] के पश्चात् एक व्यापक क्षेत्र में विस्तृत रूप में सर्वत्र प्रसारित हुआ।

वर्तमान समय में आर्य समाज इसी धार्मिक व्यवस्था को केन्द्रित कर समाज में वेदों की महत्ता स्थापित कर रहा है। वेदों में उल्लेखित देवताओं में इन्द्र, मित्र, वरूण, अग्नि, यम आदि का विशेष वर्णन प्राप्त होता हैं। इन्हें तृप्त एवं सन्तुष्ट करने के अनेक विधि-विधानों का अनुसरण करते थे। यह देवता प्रकृति में स्थित शक्ति का प्रतिरूप माने गये है। क्योंकि प्रकृति में हम अनेक शक्तियों को देखते है। यह शक्ति वर्षा, धूप, सर्दी, गर्मी आदि का प्रतिक चिह्न मानी गयी है। इन प्राकृतिक शक्तियों की पूजा मनुष्य अपनी सुख-समृद्धि में वृद्धि करने के लिए करता था।

यह विचार वर्तमान संदर्भ में भी उपयोगी माना गया है। क्योंकि वर्तमान समय में मानव प्रकृति के साथ सर्वाधिक हस्तक्षेप करने लग गया जिसका दुष्प्रभाव मानव जाति पर देखने को मिलता है। वर्तमान समय में भूमंडलीकरण[3] के कारण पृथ्वी के वातावरण में परिर्वतन देखने को प्राप्त हो रहा है। इसलिए वर्तमान में मनुष्य जाति को प्रकृति के साथ

Principal
Vidhyashram Institute of
Teacher's Training
Opp. Ashapurna Township
Uchiyarda, Jodhpur

International Level Double Blind Peer Reviewed,Refereed,Indexed Research Journal,ISSN(Print)-0974-2832,E-ISSN-2320-5474,RNI-RAJBIL-2009/29954,
Impact Factor-6.115(SJIF),May-2024,VOL-LISSUE-5

Research Paper - Hindi

"जयशंकर प्रसाद का छायावादी साहित्य"

* रौनक टाक ** डॉ. अवधेश कुमार

*शोधार्थी, संगम विश्विद्यालय, भीलवाड़ा
**शोध निर्देशक, संगम विश्विद्यालय, भीलवाड़ा

भूमिका –

छायावादी काव्य प्रवृत्ति के प्रमुख कवियों में से एक जयशंकर प्रसाद का सन् 1937 में निधन हो गया। उनकी प्रमुख काव्य–कृतियाँ हैं – चित्राधार, कानन – कुसुम, झरना, आँसू, लहर और कामायनी । आधुनिक हिंदी की श्रेष्ठतम काव्य–कृति मानी जाने वाली कामायनी पर उन्हें मंगलाप्रसाद पारितोषिक दिया गया। वे कवि के साथ–साथ सफल गद्यकार भी थे।आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास में इनके कृतित्व का गौरव अक्षुण्ण है। "वे एक युगप्रवर्तक लेखक थे जिन्होंने एक ही साथ कविता, नाटक, कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में हिंदी को गौरवान्वित होने योग्य कृतियाँ दीं। कवि के रूप में वे निराला, पन्त, महादेवी के साथ छायावाद के प्रमुख स्तम्भ के रूप में प्रतिष्ठित हुए हैं; नाटक लेखन में भारतेन्दु के बाद वे एक अलग धारा बहाने वाले युगप्रवर्तक नाटककार रहे जिनके नाटक आज भी पाठक न केवल चाव से पढ़ते हैं, बल्कि उनकी अर्थगर्भिता तथा रंगमंचीय प्रासंगिकता भी दिनानुदिन बढ़ती ही गयी है। इस दृष्टि से उनकी महत्ता पहचानने एवं स्थापित करने में वीरेन्द्र नारायण, शांता गाँधी, सत्येन्द्र तनेजा एवं अब कई दृष्टियों से सबसे बढ़कर महेश आनन्द का प्रशंसनीय ऐतिहासिक योगदान रहा है"।[1] इसके अलावा कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में भी उन्होंने कई यादगार कृतियाँ दीं। विविध रचनाओं के माध्यम से मानवीय करुणा और भारतीय मनीषा के अनेकानेक गौरवपूर्ण पक्षों का उद्घाटन।

प्रसाद जी का जन्म माघ शुक्ल 10, संवत् 1946 वि० (तदनुसार 30जनवरी 1889ई० दिन–गुरुवार) को काशी के सरायगोवर्धन में हुआ। इनके पितामह बाबू शिवरतन साहू दान देने में प्रसिद्ध थे और एक विशेष प्रकार की सुरती (तम्बाकू) बनाने के कारण 'सुँघनी साहु' के नाम से विख्यात थे। इनके पिता बाबू देवीप्रसाद जी कलाकारों का आदर करने के लिये विख्यात थे। इनका काशी में बड़ा सम्मान था और काशी की जनता काशीनरेश के बाद 'हर हर महादेव' से बाबू देवीप्रसाद का ही स्वागत करती थी।[2] किशोरावस्था के पूर्व ही माता और बड़े भाई का देहावसान हो जाने के कारण 17 वर्ष की उम्र में ही प्रसाद जी पर आपदाओं का पहाड़ ही टूट पड़ा। कच्ची गृहस्थी, घर में सहारे के रूप में केवल विधवा भाभी, कुटुबिंयों, परिवार से संबद्ध अन्य लोगों का संपत्ति हड़पने का षड्यंत्र, इन सबका सामना उन्होंने धीरता और गंभीरता के साथ किया। प्रसाद जी की प्रारंभिक शिक्षा काशी में क्वींस कालेज में हुई, किंतु बाद में घर पर इनकी शिक्षा का व्यापक प्रबंध किया गया, जहाँ संस्कृत, हिंदी, उर्दू, तथा फारसी का अध्ययन इन्होंने किया। दीनबंधु ब्रह्मचारी जैसे विद्वान् इनके संस्कृत के अध्यापक थे। इनके गुरुओं में 'रसमय सिद्ध' की भी चर्चा की जाती है।[3]

प्रसाद की ऐतिहासिक कहानियों में वैभवपूर्ण गद्य और सामाजिक कहानियों में निरीह जैसा गद्य, दोनों प्रेमचंद के सम से अलग है जिनके यहां आरोह–अवरोह का वैविध्य अपेक्षकृत कम है। प्रसाद के तत्समाग्रही गद्य का प्रवाह देश–काल परिस्थिति के संयोग से बनता है, इतिहास और दर्शन दोनों रूपों में जिसका बड़ा सघन अध्ययन नाट्कार ने कर रखा था जैसा कि उनकी नाट्य भूमिकाओं और कुछ स्वतंत्र निबंधों से भी प्रकट होता है। सभी साहित्यों के इतिहास में नाटक का माध्यम अंशत और कभी पूर्णत कविता रही है। समूचे नाटक का लेखन गद्य

Principal
Vidhyashram Institute of
Teacher's Training
Opp. Ashapurna Township
Uchiyarda, Jodhpur